प्राक्कथन

डॉ० राही मासूम रज़ा हिंदी साहित्य जगत के बहुमुखी प्रतिभाशाली साहित्यकार के रूप में जाने जाते हैं । वे एक सशक्त उपन्यासकार, संवेदनशील कवि, शायर एवं सफल संवाद दाता रहे हैं । उन्होंने प्रत्येक क्षेत्र में अपनी लेखनी का कमाल दिखाया है । राजनीति के क्षेत्र में राही जी ने व्यंग्यात्मक रूप से अपने विचार व्यक्त किये हैं । देश की तत्कालीन परिस्थिति एवं भविष्य के प्रति लेखक चिंतित दिखाई देखा देते है । उनके समस्त साहित्य में निर्भीकता दृष्टिगोचर होती है । जीवन के प्रति राही जी आस्थावादी रहे हैं । राही के समूचे साहित्य का अध्ययन करने के बाद ज्ञात होता है कि उन्होंने कुरान, वेद, बाइबल एवं पुराण आदि का कितनी गहराई से अध्ययन किया है । इस दृष्टि से उनके साहित्य में कही भी कोई त्रुटि नज़र नहीं आती । राही जी को भारतीय संस्कृति की सही पहचान थी । उनके साहित्य में भारतीय संस्कृति के प्रति अटूट प्रेम परिलक्षित होता है । डॉ० राही मासूम रज़ा द्वारा लिखे गये महाभारत के संवाद आज भी स्मरण किये जाते हैं ।

साहित्य में अनेक विषय हैं यथा : कहानी, काव्य, जीवनी, संस्मरण, रेखाचित्र तथा नाटक । इनमें से कोई भी मेरा विषय हो सकता था किन्तु उपन्यास से मैं अत्यन्त प्रभावित रही हूँ । यद्यपि पी० एच० डी० हेतु मैंने उपन्यास को अपना विषय बनाया । जिस समाज में हम रहते हैं उस समाज में अपने आस-पास घटित होने वाली घटनाओं से अवश्य प्रभावित होते हैं । एक संवेदनशील उपन्यासकार अपने उपन्यास में समाज में घटित होने वाली घटनाओं का विस्तारपूर्वक विवरण देने का भरपूर प्रयास करता है । तथा तत्कालीन समाज की परिस्थिति से अवगत कराता है । इस दृष्टि से राही मासूम रज़ा के उपन्यास हमारे वास्तविक जीवन पर गहरा प्रभाव डालते हैं ।

राही जी से पहले मैंने मुंशी प्रमचन्द के उपन्यास पढ़े थे । तब तक मैंने यह विचार भी नहीं किया था कि मैं राही मासूम रज़ा के उपन्यासों पर शोध करूंगी ।

सर्वप्रथम जब मैं आदरणीय डॉ० शैलजा भारद्वाज जी से मिली उस समय तक मैं अपना विषय चयन नहीं कर पायी थी । मैंने कुछ मुस्लिम उपन्यासकारों को चुना था किन्तु उसमें राही मासूम रज़ा का नाम नहीं था । जब शैलजा मैडम से मेरी इस विषय में बात हुई तब उन्होंने मुझसे कहा कि आप राही मासूम रज़ा को पढ़ो । उस समय सर्वप्रथम मैडम ने ही मुझे राही मासूम रज़ा का उपन्यास 'आधा गाँव' पढ़ने के लिए दिया । मैंने वह उपन्यास पढ़ा । एक बार नहीं बार-बार पढ़ा । और जितनी बार पढ़ा, हर बार ऐसा अनुभव हुआ जैसे यह मेरा गाँव है । इसके पात्र मेरे ही गाँव के लोग हैं । जब भी आधा गाँव उपन्यास पढ़ा मैं अपने गाँव की सैर कर आयी । जो उत्तर-प्रदेश में स्थित ज़िला बदायूँ के निकट एक छोटा-सा गाँव है 'उझानी' । इस उपन्यास में पात्रों द्वारा बोली जाने वाली भाषा, रहन-सहन, खान-पान सब कुछ मेरे गाँव की याद दिलाता । मेरे दादा-दादी, चाचा, बड़े पापा, सभी वही भाषा बोला करते थे (जो अब नहीं हैं) भोजपुरी उर्दू । आधा गाँव पढ़कर मैं इतनी प्रभावित हुई कि उपन्यास पूरा करने के बाद मैंने मैडम से कहा कि मुझे राही मासूम रज़ा के उपन्यासों पर ही शोध करना है । तत्पश्चात शैलजा मैडम ने ही **"डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में सामाजिक परिवेश"** विषय का चयन किया ।

शोध करने की सर्वप्रथम प्रेरणा मुझे मेरे पिता जी से मिली । मेरे पिता जी चाहते थे कि मैं पी.एच. डी. करूँ क्योंकि आर्थिक स्थिति से कमज़ोर होने के कारण मेरे पिता जी अपनी थीसिस की फ़ीस जमा नहीं कर पाये जिसके कारण वे पी.एच. डी. की उपाधि से वंचित रह गये । मैं मध्यम वर्गीय एवं सुशिक्षित परिवार से हूँ । मेरा पूरा परिवार बड़ी ही श्रद्धा के साथ अपने धर्म का अनुसरण करता है । मुस्लिम समाज में कन्या-शिक्षा पर अधिक ज़ोर नहीं दिया गया है । अतः उसे पर्दे की वस्तु माना गया है । किन्तु मेरे पिता जी ने समाज और परिवार की चिंता किये बिना हम बहनों को उच्च शिक्षा प्रदान कराई । बी.ए., एम. ए., मैंने दक्षिण गुजरात युनिवर्सिटी से उत्तीर्ण किया । तत्पश्चात मेरे पिता जी ने ही मुझे पी.एच. डी. करने के लिए प्रोत्साहित किया और मैं बड़ौदा आ गयी । पी.एच. डी. कराने का श्रेय मैं पूर्ण रूप से मेरे पिता जी को देती हूँ ।

इसके साथ ही मेरी शोध-यात्रा में मेरी माँ का भी योगदान कम नहीं है । मैं अपनी पूजनीय माँ को यही कहना चाहूँगी कि यदि आपकी ममता और त्याग मेरे साथ न होता तो मैं कुछ भी न होती । आपने मुझे हमेशा सही दिशा दिखाई और हमेशा आगे ही बढ़ने हेतु प्रोत्साहित किया । मैं आपकी ही परछाईं हूँ । आज मैं जो इस शोध कार्य को पूर्ण कर पायी हूँ यह मेरे माता-पिता के आशीर्वाद का ही फल है । मैं जो भी हूँ उन्हीं के कारण हूँ । अतः मैं अपने पूजनीय माता-पिता के चरणों में नतमस्तक हूँ ।

पी.एच. डी. रजिस्ट्रेशन के एक साल के बाद मैंने गर्ल्स हॉस्टेल में प्रवेश लिया और रहने लगी । यहाँ रहते हुए शोध करने में काफ़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा । आर्थिक रूप से काफी समय तक परेशान रही । इसके लिए मैं अपनी प्यारी छोटी बहन अरशी नूर अंसारी को सहृदय धन्यवाद अर्पित करती हूँ जो प्रत्येक माह मुझे एक हज़ार रुपये खर्च के लिए भेजती रही । यदि वह आर्थिक रूप से मेरी सहायता न करती तो संभवतः मैं हॉस्टेल में नहीं रह पाती । धन्यवाद अरशी !

शोध के दौरान ही मैं विवाह के बंधन में बँध गई । विवाह उपरांत भी मैं अपने शोध पर कार्यरत रही । वैवाहिक जीवन होने पर भी मेरे शोध कार्य में किसी भी प्रकार का कोई विघ्न नहीं आया । इसके लिए मैं अपने पति मक़सूद अहमद को सहृदय धन्यवाद अर्पित करती हूँ । जिन्होंने शोध प्रबन्ध के समय मेरा पूरा साथ दिया । मेरा हौसला बढ़ाया । पी.एच. डी. सम्पूर्ण करने हेतु विवाह के बाद भी मुझे हास्टेल में रहने की आज्ञा दी । धन्यवाद !

आभार :-

सर्वप्रथम मैं इस शोध प्रबन्ध की निर्देशिका आदरणीय डॉ० शैलजा भारद्वाज जी का हृदयपूर्वक आभार व्यक्त करती हूँ जिनके निर्देशन एवं स्नेहपूर्ण मार्ग दर्शन में मैं अपने काम को अंजाम दे पायी । जिनके योगदान के बिना यह शोध कार्य संभव ही नहीं था । उनके ममतामयी

स्नेह में मुझे सदैव आगे ही बढ़ने की प्रेरणा मिली । एक निर्देशिका के रूप में उनकी जितनी प्रशंसा की जाए, कम है । जैसे एक माँ बड़ी से बड़ी समस्या को प्रेमपूर्वक आसान करती चली जाती है, वैसे ही आदरणीय शैलजा जी ने सदैव बड़े ही स्नेह के साथ मेरे शोध कार्य में आने वाली समस्याओं को दूर किया । वे एक ऐसा व्यक्तित्व हैं जिनमें ममता, प्रेम, दया, सहानुभूति एवं सेवाभाव जैसे गुणों का समावेश होता है । आपके निर्देशन में मेरा शोध-प्रबन्ध सम्पन्न हुआ जिसके लिए मैं आपका बहुत-बहुत आभार व्यक्त करती हूँ । अतः गुरुचरणों में मेरा कोटि-कोटि वंदन स्वीकार हो ।

इसके अतिरिक्त डॉ० अनीता शुक्ला जी का मैं सहृदय आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने मेरी शोध से सम्बन्धित अनेक समस्याओं को हल करने में सहायता की । डॉ० माया प्रकाश पांडेय जी को भी मैं दिल से धन्यवाद अर्पित करती हूँ । हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० दक्षा मिस्त्री एवं अन्य सभी अध्यापकों का मैं सहृदय आभार व्यक्त करती हूँ । गुजराती विभाग के अध्यापक डॉ० भरत मेहता जी को भी मैं बहुत-बहुत धन्यवाद अर्पित करती हूँ जिन्होंने अपना मूल्यावान समय निकालकर मेरे विषय सम्बन्धित चर्चा कर मुझे ज्ञान अर्पित किया । इसके साथ ही मैं सरकारी महाविद्यालय दमन की अध्यापिका डॉ० संध्या मेरिया जी का बहुत-बहुत आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने मेरी विशेष रूप से सहायता की । साथ ही मेरे शोध प्रबन्ध में सहायक अन्य महानुभावों का भी मैं सहृदय आभार व्यक्त करती हूँ ।

इसके अतिरिक्त श्रीमती हंसा महेता लाइब्रेरी के पूरे विभाग का आभार व्यक्त करती हूँ जिसमें विशेष रूप से आदरणीय चौधरी जीतेश गुलाबराव जी को बहुत-बहुत धन्यवाद अर्पित करती हूँ जिन्होंने समय पर शोध से सम्बन्धित पुस्तकें प्राप्त कराने में सहायता की । इसके साथ ही मेरे सभी प्रिय...प्रिय...प्रिय मित्र डॉ० अमीषा शाह, गौतम पाटणवाडिया, निमिशा मिस्त्री, अपूर्वा जादव, विष्णु परमार, संस्कृत विभाग से वरदा वसा, अर्चना गामीत और तेजस व्यास का दिल से आभार व्यक्त करती हूँ जो सदैव अच्छे एवं बुरे समय में मेरे साथ खड़े रहे ।

धन्यवाद !

इसके साथ ही मैं अपने पूरे परिवार मेरे पूजनीय माता-पिता, बड़े भाई मोहम्मद आसिफ़ जान, मेरी भाभी रोहमा, मेरी छोटी बहनें सुबूही, अरशी और फ़रह को मैं बहुत-बहुत धन्यवाद अर्पित करती हूँ जो किसी न किसी रूप में मेरे सहायक रहे और मुझे दिशा प्रदान करते रहे । आप सभी को मैं सहृदय धन्यवाद अर्पित करती हूँ । धन्यवाद !

आप सभी विद्वानों से मेरा नम्र निवेदन है कि मेरे इस शोध की दिशा में किये गये छोटे से प्रयास को स्वीकार करें । अतः अज्ञानतापूर्ण हुई त्रुटियों को अपने उदार हृदय से क्षमा प्रदान करें । आभार ।

शोध छात्रा

शगुफ़्ता नूर नूरुल ग़नी अंसारी